मध्यकालीन भारत

हर्षवर्ध्दनके बाद उत्तर भारत

भारत पर अरबो का आक्रमण

- 712 ई. इराक के शासक अल हज्जाज के भतीजे एवं दामाद मुहम्मद बिन कासिम ने सर्वप्रथम सिन्ध पर आक्रमण कर वहां के शासक दाहिर को पराजित कर सिन्ध पर सता स्थापित की इस अभियान का तत्कालिक कारण खलीफा के समुद्री जहाज को सिन्ध क्षेत्रमें समुद्री डाकुओ दवांरा क्षति पहुचाना था ।
- मुस्लिमो ने सिन्ध से आगे बढ़ने की कोशिश की लेकिन प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम,चालुक्य शासक पुलकेशी एवं कश्मीर के शासकनागभट्रट प्रथम,चालुक्य शासक पुलकेशी एवं कश्मीर के शासक ललितादित्य ने उसके प्रयासों को असफल कर दिया|

बंगाल का पाल वंश

- हर्ष के समय बंगालमें शाशंक नामक राजा शासन करता था इसकी मृत्यु के बाद बंगालमें अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी इसी कारण 750 ई. में वहा के सामतों ने गोपाल नामक व्यकित को बंगाल पर शासन करने के लिए चुना इसी गोपाल ने पालवंश की स्थापना की । इसका शासन काल 750 -770 ईँ. तक रहा ।
- इसने बिहार शरीफ के निकट ओदतपुरी में एक बौध्द बिहार की स्थापना किया ।

धर्मपाल

- इसका शासन काल 770-810 ई. तक रहा इसने पालवंश की शकित गे वृध्दि की और कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । इसने भागलपुर के निकट विक्रमशीला विशवविघालय एवं सोमपुरी विशवविघालय की स्थापना करवांयी ।

देवपाल

- धर्मपाल के बाद देवपाल वंश का शकितशाली शासक था इसके शासन काल में साम्राज्य चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया । सुवर्ण दीप के शैलेन्द्रवंशी शासक बालपुत्र देव ने इसकी अनुमति से नालन्दा में एक विहार बनवांया ।
- देवपाल के पश्चात पाल वंश गर्त में चला गया और प्रतिहार राजा भोज ने पूर्वी विस्तार प्रारभ किया ।
- भोज के बाद उसका पुत्र महेन्द्रपाल तथा उसके बाद महीपाल शासक बना |
- 1160 ई. के आस पास अंतिम पाल शासक गोविन्द पाल को गहड़वांलो ने मगध से पदच्युत कर दिया
- पाल वंश का शासन काल लगभग 400 वर्ष रहा ।

सेन वंश

- पाल वंश के स्थान पर बंगालमें सेन वंश का उदय हुआ ।सेन वँश का संस्थापक सामन्त सेन था जिसने बंगाल का राजनीतिक एकीकरण किया इसने पशिचमी बंगालमें विजयपुर एवं पूर्वी बंगालमें बिक्रमपुर नामक नगर की स्थापना का एवं दोनों को राजधानी बनाया ।

- इसका उतराधिकारी वल्लाल सेना बना । जो एक योग्य व्यकित था इसने दानसागर एवं अदभुतसागर नामक ग्रन्थ की रचना की । इसका शासन काल 1158-1178 ई. रहा ।
- इसका उतराधिकारी लक्ष्मण सेन बना जो शासन काल 1178-12 05 रहा ।इसने एक और राजधानी लखनौती की स्थापना की । इसी के समय में वख्तियार खिजली का आक्रमण बंगाल पर हुआ और सेन वंश का पतन हो गया ।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- अग्नि कुल से उत्पन्न राजपूतो में गुर्जर प्रतिहारो का महत्वपूर्ण स्थान है प्रतिहार वंश की स्थापना हरिशचंद्र दवांरा हुई थी

नागभट्ट प्रथम

- प्रतिहार वंश का वांस्तविक संस्थापक नागभट्ट प्रथम था इसने विभाजित प्रतिहार शकित को एकजुट किया । इसका शासन काल 730-756 ई. तक रहा । इसी ने मुस्लिमो को सिँध से आगे बढ़ने सेरोका ।
- यह प्रतिहार वंश का दूसरा प्रभावशाली राजा था इसने त्रिपक्षीय संघर्षमें धर्मपाल को हराया ।

नागभट्ट दवितीय

- इसका शासन काल 805 से 833 ई. तक रहा । इसने कन्नौज से चक्रयुद्ध को हटाकर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया ।
- मिहिर भोज या भोज प्रथम इस वंश कासर्वश्रेष्ठ शासक था इसने आदिवराह की उपाधि धारण की और प्रतिहार साम्राज्य को शिखर पर पहुचा दिया ।
- इसके बाद महेन्द्र पाल प्रथम शासक हुआ इसके दरबार में राज शेखर नामक विदवांन रहता था । जिसने काव्य मीमांसा,कर्पुर मजंरी,बालरामायण ग्रन्थ की रचना की ।
- 1018 ईँ. में महमूद के कन्नौज पर आक्रमण के समय राजपाल यंहा का राजा था । जो अपनी राजधानी छोड़कर भाग गया था । इससे नाराज होकर चंदेल शासक बिघाधर ने उसकी हत्या कर दी ।
- 1090 ई.में कन्नौज पर गहडवांलो का नियंत्रण स्थापित हो गया ।

कन्नौज के गहडवांल वंश

- चन्द्रदेव ने गुर्जर प्रतिहार वंश के अंतिम शासक यशपाल को पराजित कर गहडवांल वंश की स्थापना की ।गहडवांल शासको को काशी नरेश भी कहा जाता है क्योकि कन्नौज राजधानी बनने के पूर्व इसकी राजधानी वांराणसी थी ।
- इस वंश का अतिंम शासक इतिहास प्रसिद्ध जयचन्द था जिसने पृथ्वी राज की सहायता नही थी
- जिसके कारण पृथ्वीराज तराइन के दवितीय युद्धमें पराजित हो गया था जयचन्द के पुत्री का नाम सयोगिता था । 1194 ईँ. में चंदावर के युद्धमें मुहम्मद गोरी ने इसे पराजित कर दिया और कन्नौजपर अधिकार कर लिया

राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूट का उत्थान चालुक्य राज्य के स्थान पर हुआ तथा उसका अंत भी चालुक्यो की एक शाखा कल्याणी के चालुक्यो दवांरा हुआ ।

- दक्षिण भारत के राज्य द्वारा उत्तर भारत के राज्यो पर आरक्रमण करने वांला या उत्तर भारत के राजनीति में हस्तक्षेप करने वांला पहला राज्य था |
- चन्द्रगुप्त इस वंश का पहला व्यक्ति था जिसनें सांमत का पद पाया जबकि इस वंश कावांस्तविक संस्थापक दतिन्तदुर्ग था जिसका शासन काल 735-755 ई. रहा
- दतिन्तदुर्ग ने वांतापी के चालुक्य वंशी शासक कीतिवर्मन को परास्त कर राष्ट्रकूटो की स्वतंत्रता की घोषणा की |
- इसका उतराधिकारी इसका चाचा कृष्ण प्रथम बना | इसका शासन काल 756-773 ई. रहा | इसने एलोरा में प्रसिधद कैलाश मदिर का निर्माण करवांया | जो एक ही को पत्थर को काटकर बनाया गया |
- इस वंश के योग्य उतराधिकारी में धुव एवं गोविन्द तृतीय महत्वपूर्ण है जिसने त्रिपक्षीय संघर्षमें राष्टकुटो को सर्वश्रेष्ठ बना दिया |
- इसके बाद अमोधवर्ष राजा बना जिसने मान्यखेट को नई राजधानीबनवांया | यह एक विदवांन राजा था जिसने स्वयं कन्नड़ भाषा मेंकविराजमार्ग नामककी रचना की |
- इस वंश के अतिंम शासक खोटिग समय मालवां के परमार शासक सीयक ने राजधानी मान्यखेट पर आक्रमण कर उसे नष्ट के दिया |

शाकम्भरी के चौहान

- चौहान वंश की अनेक शखाएँ थी इसमें सातवीं शताब्दी मेंवांसुदेव द्वारा स्थापित शाकम्भरी के चौहान प्रमुख थे |
- इस वंश के प्रारम्भिक राजा गुर्जर प्रतिहारो के सांमतके रूप में कार्य करते थे |
- दसवीं सदी के प्रारभ मेंवांक्यपतिराज प्रथम ने प्रतिहारो से अपने को स्वतंत्रकर लिया इसके उतराधिकारी एवं पुत्र सिध्दराज ने राज्य का विस्तार कर महाराजाधिराज की पदवीं धारणा की |
- इस वंश के शासक अजयराज ने अजमेंर नगर की स्थापना की एवं यहाँ पर सुन्दर महल और मदिरोंका निर्माण करवांया एवं राजधानी बनाया |
- इस वंशकाअतिंम और विख्यात राजा पृथ्वीराज तृतीय था इसका शासन काल 1179-1192 ई. रहा | इसने बुदेलखण्ड के चंदेल शासक परमार्दिव को परास्त किया |इस युद्धमें दो चंदेलवींर योध्दा आल्हा-उदल मारे गए थे 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्धमें इसने मुहम्मद गोरी किया था | लेकिन 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में गोरी से पराजित हो गया और बंदी बना लिया गया और मार डाला गया | इसी तराइन के द्वितीय युद्ध के बाद गोरी ने मुस्लिम साम्राज्य की नींव रखी एवं अपने विश्वसनीय गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक़ को यहाँ के शासन करने के लिए नियुक्त किया |

जेजाकभुक्ति व बुदेलखण्ड के चंदेल

- बुदेलखण्ड के चंदेल पहले गुर्जर प्रतिहारो के सांमतथेबुदेलखण्ड के चंदेल वंश कि स्थापना 9वीं सदी में नंन्नुक द्वारा किया गया एवं खजुराहो को अपने राजधानी बनाया |
- यशोवर्मन एवं धगदेव ने 925-1003 तक शासन किया और प्रतिहार साम्राज्य का विस्तार किया धगदेव को चंदेलों की

वांस्तविक स्वाधीनता का जन्मदाता माना जाता है इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारणा की | इसके समय में खजुराहो में विख्यात मदिर कला का निर्माण हुआ |

- इस वंश का प्रतापी शासक विघाधर था जिसने 1019-1029 ई. तक शासन किया | इसने कन्नौज के प्रतिहार शासक राजपाल को महमूद के विरुध्द पीठ दिखाने पर दडिंत किया |
- चंदेल वंश का अतिंम शासक परमार्दिदेव था जिसने पृथ्वीराज चौहान के विरूद्ध संघर्ष किया | 1203 ई. में ऐबक ने इसे पराजित कर दिया और चंदेल साम्राज्य पर अधिकार कर लिया |

मालवां के परमार

- परमार वंश के राजा राष्ट्रकूटों के सांमतथे 812 ई. मेंगोविन्द तृतीय नामक राष्ट्रकूट शासक ने मालवां विजय कर अपने प्रतिनिधि के रूपमें उपेन्द्र नामक व्यक्ति को शासन करने के लिए नियुक्त किया |
- सियक द्वितीय ने 10 वीं सदी के अंतमें अपने राज्य को स्वतंत्र घोषित किया | 972 ई. इसने राष्ट्रकूट शासक खोटिग को हराकर मान्यखेट को जला दिया |
- पहले परमार वंश की राजधानी उज्जैन थी आगे चलकर धार हो गई |
- इस वंश का प्रतापी राजा भोज था इसी ने उज्जैन से राजधानी धार बनायी |बिहार के पश्चिमी भाग पर परमारोंमें अधिकार के कारण आरा और उसके आसपास के क्षेत्र को भॉजपुर कहा जाता है यह स्वयं कवि था | इसने सरस्वती कंठामरण , सुत्रधार ग्रन्थ की रचना की | धार से कुछ भोजपुर नामक नगर बसाया | एक तालाब भोजसागर बनवांया |
- 1305 ई. में अलाउद्दीन के सेनानायको ने मालवां पर आक्रमण कर इस वंश का अंतकर दिया |

गुजरात के चालुक्य

- चालुक्य वंश की अनेक शाखाओं में गुजरात केचालुक्य भी प्रमुख थे इस वंश कासंस्थापक मूलराज प्रथम था | इसका शासन काल 942-995 ई. था | इसने अन्हिलविड़ को अपनी राजधानी बनाया |
- इसके बाद भीम प्रथम शासक बना | इसी के समय महमूद के चले जाने के बाद इसने मदिर की मरम्मत कराई |
- इसके बाद कर्ण शासक बना | इसने कर्णोश्वर मदिर एवं सागर झील का निर्माण करवांया |
- मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय मूलराज दवितीय या भीम द्वितीयशासक था | जिसने मुहम्मद गोरी को 1178 ई. में आबु पर्वत के नीचे पराजित किया था |
- भीम द्वितीय के बाद उसका भाजा लवणाप्रसाद ने गुजरात में बधेल वंश की स्थापना की |

हिन्दूशाही वंश

- काबुल घाटी तथा गांधार प्रदेश में लगर्तुमान के नेतृत्व में स्थापित तुर्क शाही को उसके एक ब्राहामण मत्री कल्लर ने प्रभावहीन कर 9वीं शताब्दी के उतराधर्द मेंहिन्दूशाही वंश की स्थापना की
- इस वंश के शासक भीम ने अपनी पुत्री की शादी लोहार वंश के क्षेमगुप्त से की जिनसे दिद्दा का जन्म हुआ जो कश्मीर

की प्रसिद्धशासिका बनी जब याकूब द्वारा काबूलपर अधिकार कर लिया तो इसने ओहिन्द को अपनी राजधानी बनाया |

- जयपाल इस वंश का उतराधिकारीआनदपाल हुआ | इस समय भी महमूद का आक्रमण जारी रहा |
- हिन्दूशाही वंश ने सबसे ज्यादा महमूद के आक्रमणका सामना किया | 1026 ई. में लगभग इस वंश का अंत हो गया |

कश्मीर के राजवंश

- 7वीं शताब्दी में दुर्लभवर्धन ने कश्मीर में कार्कोट वंश की स्थापना की | उसने प्रतापपुर नामक नगर बसाया |
- ललितादित्य मुकतापीड़इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक था धार्मिक दृष्टि से उदार था चीनी दरबार में दुत मडंल भेजा | कश्मीर में मार्तण्ड मदिर का निर्माण करवांया | प्रभाषपाटन नामक नगर बसाया |

उत्पल वंश

- कार्कोट वंश के अंतिम राजा जयपीड़विनयादित्य के समय में जनता असतुंष्ट हो गयी इसका लाभ उठाकर अवन्तिपुर नामक नगर एवं सुयापुर का निर्माण करवांया |
- इसका उतराधिकारी शंकरवर्मन बना | युद्धो में व्यस्त रहने के कारण खजाना खाली होने के से जनता असुतंष्ट हो गई इससे जनता ने यशस्करं को सता सौप दी |

लोहार वंश

- 939 ई. में यशस्करं के उतराधिकारी सग्रामराज की हत्या उसके मत्री पर्वगुप्त ने करके स्वयं सता सभाल ली और लोहार वंश की स्थापना की |
- इसका पुत्र क्षेमगुप्त उतराधिकारी हुआ जिसका विवांह हिन्दुशाही राजकुमारी दिद्दा से हुआ | 958 ई. में क्षेमगुप्त की मृत्यु के बाद 50 वर्ष तक कश्मीर की सता विद्दा के हाथ में रही | 1003ई. में इसकी मृत्यु के बाद सग्रामराज शासक बना |

दक्षिण भारतीय राज्य

- सातवांहन के बाद दक्षिण भारत की राजनीतिक एकता भंग हो गयी |वांकाटकों ने इसे एकजुट करने की कोशिश की |छठी सदी में के लगभग 300 वर्ष तक दक्षिण भारत के इतिहास में दो शकितशाली की चर्चा है
- (1)वांतापी के चालुक्य (2)काची के पल्लव

चालुक्य वंश

- चालुक्यों की शक्ति का केन्द्र वांतापी था जो बीजपुर राज्य मेंस्थित था यह मूल शाखा पश्चिमी चालुक्य के नाम से जाना जाता है
- मूल शाखा का इतिहास पुलकेशिन प्रथम से शुरू होता है इसने वनवांसी के कदम्बो एवं मैसूर नलों को युद्ध में परास्त कर साम्राज्य का विस्तार किया |
- इसका उतराधिकारी मगलेश हुआ जिसकी हत्या पुलकेशिन द्वितीय ने कर दी और शासक बन बैठा | इसी के समय 630-34 ई. में हर्षवर्धन के साथ पुलकेशिन द्वितीयका युद्ध हुआ था जिसमें हर्ष पराजित हुआ |इस युद्ध का उल्लेख एहोल अभिलेख में है | पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर वांतापीकोड की उपाधि धारणा की |इस युद्ध में पुलकेशिन द्वितीय मारा गया |

- पुलकेशिन ने बेगी राज्य पर अधिकार कर लिया और अपने भाई विष्णुवर्धन को वहा का शासक नियुक्त किया | दक्षिण के बेगी के चालुक्य राज्य की स्थापना की विष्णुवर्धन ने किया |
- वांतापी के चालुक्य वंश का एक महत्वपूर्ण शासक विक्रमादित्य हुआ जो 655 से 680 तक शासन किया | इसने लाट क्षेत्र पर विजय हासिल कर वहा अपने भाई जयसिंह को शासक नियुक्त किया | जिसने गुजरात में चालुक्य वंश की शाखा स्थापित की |
- **कल्याणी के चालुक्य**
- इस शाखा की स्थापना का श्रेय भीभ पराक्रम को दिये जाता है यह प्रारभ में राष्ट्रकूट कासांमतथा | इसने अतिंम शासक करक को परास्त के सता पर अधिकार कर लिया | प्रारभमें मान्यखेट को ही अपनी राजधानी बनाया |
- इस वंश का महत्वपूर्ण शासक सोमेंश्वर प्रथम था इसको चोल शासक राजाधिराज ने कोम्पम के युद्ध में पराजित किया था यह चालुक्य की राजधानी मान्यखेट से कल्याणी ले गया |

काची के पल्लव

- इस वंश का उत्थान सातवांहनों के पतन के साथ ही शुरू हो गया | इस वंश के संस्थापकसिंहविष्णु थे जिनका शासन काल 575-600 ई. था | किरातार्जुनीय कारचयिता भारवि इसी के समय हुआ |
- इसका उतराधिकारी महेन्द्रवर्मन प्रथम था जो चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीयके समाकालीन था | इसने मताविलास प्रहसन नामक ग्रन्थ की रचना की |
- इसके उतराधिकारी नरसिंहवर्मन ने पुलकेशिन द्वितीय को पराजित के मार डाला और वांतापीकोड की उपाधि धारणा की | इसने महाबलीपुरम नामक नगर बसाया | ह्वेनसांग ने इसके समय में काची यात्रा की थी |
- नरसिंहवर्मन के बाद महत्वपूर्ण शासक नरसिंहवर्मनद्वितीय हुआ इसका काल कला,सस्कृति का उत्थान काल था | इसने कांची का कैलाश नाथ मदिर,महबलीपुरम का मदिर का निर्माण करवांया | प्रशिद्ध विदवांन दंडिन इसके दरबार में रहते थे |

दिल्ली सल्तनत

- दिल्ली सल्तनत के अधिकांश शासक तुर्क थे | इनकी मातृभाषा तुर्की थी एवंम् सरकारी काम-काज की भाषा फ़ारसी थी |

कुछ महत्वपूर्ण इतिहासकार एवं उनकेग्रन्थ

अलबरूनी

- यह महमूद गजनवीं के साथ भारत आये थे | इनका ग्रन्थ किताब उल हिन्द है |

उत्बी

- यह मुहमद का दरबारी इतिहासकार था | यह भारत नही आया था | इसकी प्रमुख पुस्तक तारीख-ए-यामिनी है |
- फिरदोसी
- महमूद गजनवींका दरबारी कवि था | शहनामा की रचना की |

- मिन्हाज-उल-सिराज
- तबकाते नासिरी पुस्तक की रचना की |
- जियाउदधीन बरनी
- तारीख-ए-फिरोजशाही एवं फतवां-ए-जहाँदारी पुस्तक लिखी |
- आमिर खुसरो
- खजाएन-उल-फुतूह एवं तुगलकनामा पुस्तक की रचना की |
- इब्नबतूता
- अफ़्रीकी या मोरक्को 1333 ई. में मुहम्द विन तुगलक के दरबार में आया | इसने किताब-उल-रेहला ग्रन्थ की रचना की |
- शम्स- ए- सिराज
- तारीख-ए-फिरोजशाही ग्रन्थ की रचना की |
- फिरोजशाह तुगलक
- इसने अपनी आत्मकथा 'फतुहाते फिरोजशाही' की रचना की |
- अली अहमद
- चचनामा की रचना अरबी भाषा में की गई |
- महमूद गजनवीं
- 998 ई. में महमूद गजनवीं ने गजनी का सुल्तान बनने के बाद भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया | इसके दो कारण थे इस्लाम के धार्मिक-विचार को फैलाना एवं भारत से धन प्राप्त करना | यद्यपि महमूद का भारत पर आक्रमण बहुत सफल नही रहा फिर भी महमूद ने भारतीय राजनीति को अस्त व्यस्त कर दिया |
- महमूद का पहला आक्रमण भारत के सीमांत प्रदेशो पर 1000 ई. में हुआ | महमूद का सबसे ज्यादा प्रतिरोध हिन्दुशाही वंश को करना पड़ा | इसका महत्वपूर्ण आक्रमण 1018-19 ई. में चंदेलों के विरुद्ध हुआ | इस समय चंदेल राजा विद्याधर था | महमूद का सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण 1025-26 ई. में सोमनाथ मन्दिर पर हुआ | इस समय गुजरात के शासक भीम द्वितीयथा | महमूद का अंतिम आक्रमण सीमांत प्रदेशो पर 1027 ई. में हुआ |महमूद ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया |

मुहम्मद गोरी

- गयासुद्दीन मुहम्मद 1173 ई. में गोर साम्राज्य का शासक बना तो अपने भाई शहाबुद्दीन को गजनी का गवर्नर बनाया |यहा शहाबुद्दीन इतिहास में मुहम्मद गोरी के नाम से प्रशिद्ध है |
- महमूद गोरी ने गोमल दरा हो कर सर्वप्रथम मुल्तान और उच्छ पर अधिकार कर लिया | 1178 ई. में गोरी को गुजरात के भीम द्वितीय ने आबू पर्वत के निकट हरा दिया |
- महमूद गोरी ने पंजाब पर आक्रमण कर 1184 से 85 में महमूद गजनवीं वंश के अंतिम शासक खसरो मलिक को परस्त के उस पर अधिकार कर लिया |
- महमूद गोरी का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध तराइन का प्रथम एवंद्वितीय युद्ध था |1191 ई. के प्रथम युद्ध में यह पृथवींराज चौहान से पराजित हो गया था जबकि 1192 ई. के द्वितीय युद्ध में पृथवींराज को पराजित कर बंदी बना लियाव्म गोली मार कर मार डाला | 1192 के विजय के बाद गोरी भारत की जिम्मेदारी अपने विश्वशनीय गुलाम ऐबक को सौपकर स्वदेश लोट गया |

- 1194 ई. में गोरी फिर वांपस आया चन्दावर के युद्ध मेंकन्नौजके शासक जयचंद को पराजित कर उस पर अधिकार कर लिया |
- 1202 से 03 ई. में एक साधारण तुर्की सेनापति वख्तियार खिलजी ने बंगाल, बिहार पर अधिकार कर लिया | इसने ओदंतपुर नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया और वहा निवांस करने वांले बौद्ध भिक्षुओ को मार डाला |
- गोरी का अंतिम आक्रमण 1205 ई. में खोखरों के विद्रोह को दबाना के लिए किया | विजय के बाद वांपस लोटते समय 1206 में रास्ते में इसकी हत्या कर दी गई |

गुलाम वंश

- कुतुबुद्दीन ऐबक
- गोरी की मृत्यु के बाद लौहार की जनता ने गोरी के प्रतिनिधि ऐबक को लाहोर पर शासन करने का निमंत्रण दिया और ऐबक ने भारत की सत्ता संभाली | गोरी का दूसरा गुलाम यल्दोज गजनी का तथा कुबाचा उच्छ का शासक बन बैठा |
- ऐबक को असीम उदारता के लिए लाख बक्श कहा जाता है | 1210 ई. में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरने के कारण ऐबक की मृत्यु हो गयी |
- ऐबक ने दिल्ली में कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद और अजमेंर में ढाई दिन काझोपडा बनवांया | उसने कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर कुतुबमीनार के निर्माण का कार्य शुरू करवांया जिसे इल्तुतमिश ने पूरा किया |
- ऐबक की मृत्यु के बाद लौहार के अमीरों ने आरामशाह को सुल्तान घोषित किया | जबकि दिल्ली के अमीरों ने बदायु के गवर्नर , जो ऐबक का गुलाम अवन दामाद था, को सुल्तान घोषित किया | जुंद की लड़ाई में इल्तुतमीश नेआरामशाह को पराजित कर दिया |

इल्तुतमीश

- इल्तु तमिश का शासन काल 1210 से 1236 ई. तक रहा | इसने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया | इसे दिल्ली सल्तनत कावांस्तविक संस्थापक भी माना जाता है |
- इल्तु तमिश ने तराइन के युद्ध में यल्दौज को पराजित कर एवं कुबाचा के आत्महत्या कर लेने के बाद साम्राज्य को स्थिरता प्रदान की |
- 1229 ई. में बगदाद के खलीफा से दिल्ली सल्तनत की खिलाफत प्राप्त किया | इसने दो सिक्के , चांदी के टका और ताम्बे का जीतल चलवांया | इल्तुतमीश पहला शासक था जिसने सिक्के का माननी कारण करवांया | इसने चहल गामी (चालीस गुलामो का दल) की स्थापना की | इसने न्याय के लिए दरबार में घंटा लगवांया |
- कुतुबमीनार के निर्माण के कार्य को पूरा करवांया |

रजिया सुल्तान

- इल्तुतमिश ने रजिया सुल्तान को अपनी उतराधिकारी नियुक्त किया | लेकिन तुर्क अमीरों एवं इक्तादारो एवं रूकुद्दीन फिरोज की माता शाहतुर्किन ने फिरोज को सुल्तान घोषित कर दिया

| यह बिलासी एवं अत्याचारी शासक था | रजिया जनता के समर्थन से सुल्तान बनी |

- रजिया पहली मुस्लिम महिला थी जिसने सुल्तान का पद प्राप्त किया | बठिण्डा का शासक अल्तुनिया 1240 ई. में विद्रोह के दिया रजिया इसके विरुद्ध अभियान चलाई लेकिन बंदी बना ली गई | अल्तुनिया से रजिया विवांह कर दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने की कोशिश की, लेकिन 1240 ई. में कैथल के निकट दोनों की हत्या कर दी गई |

बहरामशाह

- इसका शासनकाल 1240 से 42 ई. रहा । इसके समय में पहली बार नाएब -ए-ममलिकात का पद बनाया गया । इस पद पर पहली बार एतगीन को बहाल दिया गया |इसके समय मेंमंगोल का प्रथम आक्रमण हुआ

महमूद शाह

- इसका शासन काल 1242 से 46 तक रहा । इसके समय मेंमंगोलों का दुबारा आक्रमण हुआ ।

नासिरुद्दीन महमूद

- इसका शासन काल 1246 से 65 ई. तक रहा । 1265 ई. में नासिरूद्दीन महमूद की मृत्यु हो गई | इसी समय बलबन नाएब-ए-ममलिकात के पद पर बहाल हुआ । लेकिन विरोध के कारण बलबन को हटाकर पहली बार एक भारतीय मुसलमान अबुल रेहान को इस पद पर बैठाया गया कुछ समय बाद फिरबलबन इस पर दुबारा नियुकत हो गया ।

बलबन

- इसका शासन काल 1266-86 ई. रहा ।इसने चालीस दल को भंग कर दिया । इसने सिजदा पैबोस की नीति लागू की । इसकी साम्राज्य नीति लौह एवं रकत की नीति पर आधारित थी ।

कैकबाद

- 1286 ई. में बलवन की मृत्यु के बाद कैकुबाद शासक बना। इसने आरिज-ए-मुमालिक के पद पर जलालुद्दीन खिजली को नियुकत किया ।

कैमुर्स

- जलालुद्दीन खिजली ने कैकुबाद की हत्या कर कैामुर्स को शासक बनवांया लेकिन वांस्तविक सत्ता जलालुद्दीन के हाथ में आ गयी कुछ दिन इसकी हत्या कर दी गई और खिजली वंश की स्थापना किया ।
- बलवन ने आरिज-ए-मुमालिक की स्थापना किया ।

खिलजी वंश

जलालुद्दीन खिजली

- खिजली वंश का संस्थापक जलालुद्दीन खिजली था जिसने किलोखरी महल में सता ग्रहण किया जिसका निर्माण बलवन ने करवांया था 70 वर्ष के उम्र में शासक बना ।
- अलाउद्दीन खिजली की साम्राज्यवांदी नीति का प्रमुख अभियान गुजरात था जिस पर बघेल वंश के राय कर्णदेव पकड ली गई जिससे अलाउद्दीन ने शादी कर ली और एक हिजड़ा मलिक काफुर मिला लेकिन पुत्री देवलरानी के शासक रामचन्द्र के यहा शारण ली । 1303 ई. में चितौड अभियान किया जिसका कारण रानी पदमिनी को पाना था अलाउद्दीन ने

चितौड विजय कर अपने पुत्र खिज खां को शासक बनाया और चितौड का नया नाम खिजबाद रखा ।

- अलाउद्दीन के दक्षिण अभियान का नेतृत्व मलिक काफूर ने किया । देवगिरी अभियान में वहा के शासक रामचन्द्र और देवलरानी को दिल्ली लाया गया रामचन्द्र को राय -रयान की उपाधि दी गई एवं देवलरानी की शादी खिज्र खाँ से कर दी गई
- विद्रोह को रोकने के लिए आपसी मेंल जोल पर रोक,मघपान पर रोक लगा दिया ।
- प्रशासन में सुधार के क्रम में घोडे के लिए दाग एवं हुलिया प्रणाली शुरू किया गुप्तचर प्रणाली के सुधार के लिए बरीद-ए-मुमालिक विभाग बनाया । बाज़ार पर नियंत्रण के लिए बाज़ार नियंत्रण व्यवस्था लागू की | अलाउद्दीन ने भूमि की माप कराई ,राजस्व के संचालन के लिए दीवांन-ए-मुस्तखराज विभाग खोला|
- बाज़ार व्यवस्था के देख रेख के लिए दीवांन-ए-रियासत का गठन किया गया | इसके लिए शहना-ए-मंडी नामक अधिक होता था
- अलाउद्दीन ने दिल्ली में एक किला कौशिक-ए-सिरी का निर्माण करवांया| अलाई दरवांजा का निर्माण करवांया | कुतुबमीनार के दुगने आकार के मीनार बनाने का निर्माण किया | 1316 ई. में अलाउद्दीन की मृत्यु हो गया |
- अलाउद्दीन ने सीरी को अपने राजधानी बनाया |

मुबारक शाह खिजली

- मुबारक शाह खिजली मालिक काफूर की हत्या कर गद्दी पर बैठा | इसका शासम काल 1316-1320 रहा | यह दिल्ली का पहला सुल्तान था | जिसने स्वंय खलीफा घोषित किया |
- 1320 ई. में खसुरो ने इसकी हत्या कर शासक बन गया | लेकिन विलासी प्रवृति एवं प्रशासनिक अक्षमता के कारण दीपालपुर के गोजी मालिक ने एक छोटे मुठभेड़ में इसकी हत्या कर दी और गियासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा |

तुगलक़ वंश

- इस वंश कासंस्थापकगियासुद्दीन तुगलक़ था जिसने 1320-25 ई. तक शासन किया | यह एक विद्वान शासक था |लगान के रूप में उपज का 1/10 तक लेने का आदेश दिया |

मुहम्मद बिन तुगलक़

- गियासुद्दीन की मृत्यु केबाद उसका पुत्र जौना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक ने नाम से गद्दी पर बैठा इसका शासन काल 1324-1351 ई. रहा।
- इसने खुतबा पर से खलीफा का नाम बाहर कर दिया । यह हिन्दुओ के होली के त्यौहार में भाग लेता था इसके जैन विद्वान जिनप्रभा सुरी को अपने महल में स्वागत किया नई राजधानी देवगिरी का नया नाम दौलताबाद रखा ।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने प्रतीकात्मक मुद्रा जारी करने का निर्णय लिया ताबँ एवं कांसे की मुद्रा जारी की गई
- कृषि विस्तार के उद्देश्य से दीवांन-ए-कोही नामक विभाग खोला जिसका प्रधान अमीर-ए-कोही होता था

- इसी के शासनकाल में 1336 ई. में हरिहर एवं वुकका नामक दो भाइयों ने विजयनगर साम्राज्य को स्थापित कर लिया 1338 ई. मेंबंगालस्वतंत्र हो गया देवगिरी के आसपास के क्षेत्र में हसन गगु के नेतृत्व में बहमनी साम्राज्य की नवीं पडी
- मुहम्मद बिन तगुलक ने जहापनाह नगर एवं आदिलाबाद के दुर्ग का निर्माण करवांया ।

फिरोज शाह तगुलक

- थट्टा में मुहम्मद बिन तगुलक की मृत्यु के बाद वही पर अमीरों के कहने पर फिरोज तगुलक ने सता सभाल ली । इसकी माँ बीबी जैला राजपूत सरदार रणमल की पुत्री थी ।
- इसने किसानो के ऋण को माफ कर दिया एवं सरकारी पद को वंशानुगत बना दिए
- शक्रवांरी खुतबे में दिल्ली साम्राज्य के सभी सुल्तानो का नाम शामिल किया इसमें ऐबक का नाम नही है ।
- इसने ब्राहाणो को भी जजिया कर देने के लिए बाध्य किया इसने 23 प्रकार के करों को समाप्त कर शरीयत के अनुसार केवल चार प्रकार के कर जजिया ,जकात ,खम्श एवं खराज लिया | इसके अलावां सिचाई कर के रूप में हक-ए-शर्ब लिया जाता है
- उत्पादन बढाने के उद्देश्य से दासों को खरीदा गया इनकी संख्या 1,80,000 तक पहुँच गया इनकी देखभाल के लिए सुल्तान ने दीवांन-ए-बदगान विभाग बनाया ।
- इसने मुस्लिम गरीबो के कल्याण के लिए दीवांन-ए-खैरात नामक एक विभाग की स्थापना किया । अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित हौज-ए-खास की मरम्मत भी करवांया ।
- इसने अशोक के दो अभिलेख टोपरा एवं मेंरठ से दिल्ली मंगवांया ।इसने फतेहाबाद,फिरोजाबाद.हिसार, फिरोजपुर और जौनपुर नामक नगर को बसाया ।
- तुगलक वंश का अंतिममहत्वपूर्ण शासक मुहम्मद शाह बना । इसी के समय जौनपुर में शर्की साम्राज्य का उदय हुआ । 1398 ई. में तैमुर लग का आक्रमण इसी के शासन काल में हुआ ।

सैयद वंश

- इस वंश के संस्थापक खिज्र था जिसने 1414 ई. में इस वंश की स्थापना किया । यह सुल्तान की उपाधि धारण की न कर रैयत -ए-आला की उपाधि से खुश रहा ।

शाहआलम

- 1434 ई. में मुबारक शाह की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा । यह 1451 ई. में सरहिन्द के गवर्नर बहलोल लोदी के पक्ष में गद्दी छोड कर बदायूं चला गया । जहां 1451 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी ।

लोदी वंश

- बहलोल लोदी ने प्रथम अफगान राज्य की स्थापना 1451 ई. में किया । इसने बहलोल नामक सिक्का चलाया | इसके शासन काल में अफगानो का पलायन काफी मात्रा में भारत की और हुआ |

सिकन्दर शाह लोदी

- 1489 ई. में बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद यह शासक बना । इसने 1504 ई. में आगरा नगर बनवांया तथा 1506 ई. में

आगरा राजधानी बना ।इसने भूमि की माप कराई । इसके लिए उसने गज-ए-सिकन्दरी का प्रयोग किया ।

- इसने यानेश्वर के एक तालाब में हिन्दुओ के स्नान पर प्रतिबंध लगाया । मुसलमानो को ताजिया निकालने एवं स्त्रियों को पीरों एवं सतों के मजार पर जाने से मना किया |
- इसके आदेश पर संस्कृत के एक आयुर्वेद ग्रन्थ का फारसी में फरहगे सिकन्दरी के नाम से अनुवांद हुआ |
- इसने आगरा को अपनी नयी राजधानी बनवांया |

इब्राहिमलोदी

- 1517 ई. में सिकन्दर की मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी शासक बना | इसके शासन काल में पानीपत का प्रथम युद्ध हुआ जिसमें बाबर ने इसे पराजित कर मगुल वंश की स्थापना किया | 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में पराजय के बाद लोदी वंश का अंत हो गया और एक नये वंश मगुलवंश की स्थापना हुई |

स्वतंत्रप्रान्तीय राज्य

जौनपुर का शर्की राज्य

- जौनपुरनगर की स्थापना फिरोज शाह तुलगक ने 1460 ई. में किया | मलिक सरवर जिसे तुगलक़ ने मलिक-उस-शर्क का उपाधि प्रदान किया था इसने तैमूर के आक्रमण के अव्यवस्था का लाभ उठाकर शर्की वंश की स्थापना की |
- इब्राहिम शाह शर्की इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक हुआ जिसने प्रभावशाली ढग से राज्य का विस्तार किया | उसने शिराज-ए-हिन्द की उपाधि प्राप्तकी |
- इसके उतराधिकारी कमजोर थे | हुसैन शाह शर्की के समय बहलोल जौनपुर पर अधिकार कर लिया |पद्मावत के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी यहाँ रहते थे | इब्राहिम शाह शर्की ने अटाला मस्जिद का निर्माण किया |

बंगाल

- 1338 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक़ की व्यस्तता का लाभ उठाकर फरवरूद्दीन मुबारक शाह ने बंगाल को एक स्वतंत्रराज्य बनाया |
- बंगालका एक महत्वपूर्ण शासक सिकन्दरशाह बना जो 1389 ई. तक शासन किया | सिकन्दर ने पाण्डुआ में अदीना मस्जिद का निर्माण करवांया |
- 1493 ई. में अलाउद्दीन हुसैन शाह बंगालका शासक जो चैतन्य का समकालीन था इसने छोटा सोना मस्जिद का निर्माण करवांया |
- इसका उतराधिकारी नुसरत शाह हुआ | इसने गोड में बड़ा सोना एवं कदम रसुल मस्जिद का निर्माण करवांया |
- इस वंश काअंतिमशासक ग्यासुद्दीन महमूद शाह हुआ | 1538 ई. में शेरशाह ने बंगाल पर अधिकार कर लिया |

मालवां

- मालवांमेंस्वतंत्रराज्य की स्थापना 1401 ई. में दिलावर खाँ ने किया |
- इसके पुत्र एवं उतराधिकारी अलप खाँ हुसंगशाह के नाम से गद्दी पर बैठा | यह मालवां की राजधानी धार से माण्डु ले गया |

- इस वंश का अतिंम शासक महमुद शाह द्वितीय हुआ |1531 ई. में गुजरात के शासक बहादुरशाह ने माण्ड पर आक्रमण कर इसे मार डाला एवं मालवां को गुजरात में मिला लिया |

गुजरात

- गुजरात राज्य की स्थापना 1407 ई. में जफर खाँ की |
- 1411 ई. में इसकी मृत्यु के बाद अहमदशाह शासक बना | इसे गुजरात के स्वतंत्र राज्य कावांस्तविक संस्थापक माना जाता है अहमदशाह ने अहमदाबाद नगर की स्थापना किया और राजधानी पाटन से हटाकर अहमदाबाद में स्थापित किया | गुजरात के हिन्दओ पर पहली बार जजिया कर लगा दिया |
- 1441 ई. में अहमदशाह की मृत्यु के बाद सबसे महत्वपूर्ण शासक महमूद बेगडा शासक बना | इसने गिरनार की पहाड़ी के नीचे मुस्तफाबाद नाम का नया शहर बसाया | और इसे अपनी दूसरी राजधानी की स्थापना किया | महमूद बेगडा ने चम्पानेर के निकट महमूदाबाद नगर की स्थापना किया |
- 1511 ई. में इसकी मृत्यु के बाद बहादुरशाह शासक बना | जिसने मालवां को अपने राज्य में मिला लिया |

मेंवाड़

- 1303 ई. में अलाउद्दीन ने मेंवाड के राजा रत्न सिंह को परजित कर इस पर अधिकार कर लिया | मुहम्मद बिन तुगलक़ के समय सिसोदिया वंश के हम्मीरदेव ने मेंवाड़मेंस्वतंत्रराज्य की स्थापना की |
- इस वंश का महत्वपूर्ण शासक राणाकुम्भा था इन्होंने पडोसियों को परास्त कर मेंवांड़ का विस्तार किया | इसने चितौड़ के कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवांया |
- इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक राणा सागा था मालवां के सरदार मेंदनी राय के सहयोग से मालवां के सुल्तान महमूद द्वितीय को बंदी बना लिया |1527 ई. मेंखानवां की लड़ाई में पराजित हो गया |

कश्मीर

- 1339 ई. में कश्मीर में पहला मुस्लिम शासन स्थापित हुआ | इसकी स्थापना शम्सुद्दीन शाह मीर ने किया |
- 1420ई. में जैन-ऊल-आबंदीन गद्दी पर बैठा | इसने कश्मीर में जजिया को हटा दिया | गोवध पर प्रतिबध लगा दिया | इसके निर्देश पर महाभारत एवंराजतरंगिणी का फारसी में अनुवांद करवांया गया |

भक्ति आंदोलन

- भक्ति आंदोलनका विकास दो चरणोंमें हुआ | पहला चरण दक्षिण भारत में 7वीं सदी से 13सदी तक तथा दूसरा चरण 13 वीं सदी से 16 वीं सदी तक पूरे भारत में हुआ |
- आठवीं सदी में शंकराचार्य का जन्म केरल के कालंदी ग्राम में हुआ इन्होंने ज्ञानमार्ग को मोक्ष प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन बताया | शकराचार्य ने अद्वैतवांद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया |
- दक्षिण भारतमें अलवांर एंव नायक सतो ने 7 वीं से 12 वीं सदी के मध्य भक्ति मार्ग का प्रचार किया |

रामानुज

- 12 वीं सदी ने इसका जन्म तिरूपति के निकट हुआ | इन्होंने सगुण भक्ति पर बल देते हुए विशिष्टाद्वैतका प्रतिपादन किया |

माध्वाचार्य

- माध्वाचार्यका जन्म उडुपी में हुआ और वह विष्णु के भक्त थे इन्होंने दैवतवांद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया | ये कहते थे ईश्वर को केवल भक्ति के मार्ग से प्राप्त किया जा सकता है |

निम्बार्कचार्य

- इसका जन्म मद्रास के बेलारी में हुआ | ये कृष्ण के उपासक थे इन्होंने दै्वतदैवत के सिद्धांत का प्रतिपादन किया |
- **बल्लभाचार्य**
- ये तेलगु ब्राहामण थे जिनकी शिक्षा काशी में हुई फिर कृष्णदेवराय के दरबार मेंचले गये | ये कृष्ण भक्ति को श्रेष्ठ मानते थे इन्होंने शुध्दव्दैत के सिद्धान्तका प्रतिपादन किया |

रामानन्द

- भक्ति आंदोलन को दक्षिण से उत्तर लाने का श्रेय है इन्होंने राम की उपासना पर बल दिया | इसके 12 शिष्यों में कबीर,सेना,रैदास,धन्न शामिल थे | हिन्दी में उपदेश देने वांले प्रथम वैष्णव संत थे |

कबीर

- कबीर ने एकेश्वरवांद में आस्था एवं निराकर बर्हा की उपासना पर बल दिया | इसके उपदेशो की चीजक में सकलित किया गया है |

गुरु नानक

- इसका जन्म 1489 ई. में एवं मृत्यु 1538 ई. में हुआ | इसके विचारों को गुरू ग्रन्थ में सकलित किया गया है |

चैतन्य

- चैतन्य महाप्रभु का जन्म नादिया जिले में हुआ | कृष्ण की उपासना एवं भक्ति को व्यापक स्वरूप इन्होंने प्रदान किया |

मीरा

- मीरा राठौर वंश की बेटी और सिसोदिया वंश की बुहु थी | इन्होंने कृष्ण भक्ति को अपनाया |

सूरदास

- इन्होंने यह कृष्ण भक्ति को अपनाया | इन्होंने वल्लभाचार्य से शिक्षा लली थी सूरसागर इनकी प्रमुख रचना है |

तुलसीदास

- राम भक्त के रूप मेंप्रसिद्ध है रामचरितमानस इनकी प्रसिद्ध रचना है

सूफी आंदोलन

- इस्लाम में विभिन्न रहस्यात्मक प्रवृतियो एवं आदोलनो को सूफी मत कहते है सूफीवांद ने इस्लामी कट्टरपन को त्याग दिया । सूफी अपने ईशवर को प्रियतमा मानते है जिन्हे आकृष्ट करने के लिए नाच गाना और कव्वाली का भी सहारा लिया ।
- प्रारभ में सूफी मत का केन्द्र मध्य एशिया था महिला सूफी राबिया के काल में सूफी मत चरमोत्कर्ष पर पहुच गया ।
- भारत में सूफी मत का प्रचार प्रसार लगभग 12वीं शताब्दी में शुरू हुआ । सूफी मत की अनेक विचाराधारा भारत आई ।

चिश्ती सिलसिला

- इसके संस्थापक मुईनुद्दीन चिश्ती गोरी के साथ भारत आए । इनकी गतिविधियो का प्रमुख केन्द्र अजमेंर था । परम्परा के

अन्य सूफी कुतुबुद्दीन बख्तियार , काका , बाबा फरीद , निजामुद्दीन औलिया प्रमुख है ।

सुहरावर्दी

- भारत में इसकी सथापना का श्रेय बदरूद्दीन जकारिया को है ।इनका केन्द्र सिधु एवं मुल्तान था । मुल्तान में इन्होने एक बडा खानकाह बनाया ।

कादिरी सिलसिला

- इसकी स्थापना सैयद अब्बुल कादिर अल जिलानी ने किया ।

सतारी सिलसिला

- इसके संस्थापक अब्दुल्ला सतरी थे । इसके महत्वपूर्ण संत मुहम्मद गौस था तानसेनने ईरानी संगीत की शिक्षा इन्हीं से ली ।

चोल साम्राज्य

- 850 ई. में विजयालय को चोल साम्राज्य का द्वितीयसंस्थापक कहा जाता है इसने पाण्ड्य से तंजौर द्वीनकर उरैयूर के स्थान को अपनी राजधानी बनाया एवं नरकेसरी की उपाधि धारण की।
- परांतक प्रथम एक महत्वपूर्ण शासक हुआ जिसने पाण्ड्यो की बेल्लुर के युद्धमें पराजित कर मदुरा पर अधिकार कर लिया एवं मदुरैकोंड की उपाधि धारण की ।

राजराज

- 985 ई. में राज राज शासक बना । इसकी सबसे महत्वपूर्ण विजयश्रीलंका के शासक महेन्द्रवर्मन पाचवाँ को हराकर उसकी राजधानी अनुराधापुर को नष्ट कर दिया । इस अभियान में जीते प्रदेश का नाम मामुण्डी चोलमण्डलम रखा एवं उस क्षेत्र की राजधानी पोलोनरूवां को बनाया । इसने तंजौर मेंप्रसिद्ध राजजेश्वर या बृहदेश्वर मदिर का निर्माण करवांया ।
- राजाराम प्रथम के बाद उसका पुत्र उतराधिकारी राजेन्द्र प्रथम बना । जल सेना की मजबुती की वजह से बंगाल की खाडी इसके लिए चोल झील में परिवर्तित हो गया । इसने शैलेन्द्र शासकों को अपनी अधीनता मानने के लिए बाध्य किया । उत्तर भारत के सफल अभियान के कारण इसने गगैकोण्डचोल की उपाधि धारण की तथा इस विजय के उपलक्ष में कावेरी तट के निकटगगैकोण्डचोलपुरम नामक नयी राजधानी का निर्माण करवांया ।
- चोल शासक कुलोतुग प्रथम के समय 1077 ई. में चीनी दरबार में92 व्यकितयो का एक दूत मडल भेजा गया जो एक व्यापारिक दूत मंडल था ।
- चोल प्रशासन की प्रमुख विशेषता स्थानीय स्वशासन था । ग्राम स्तर पर उर एवं सभा नामक दो समितियां कार्य करती थी ।

चोल काल के बाद के वंश

- इसका उदय पहाड़ी सरदार के रूप में हुआ । राजवंश के रूप में इसकी स्थापना विष्णुवर्ध्दन ने की इसका केन्द्र आधुनिक मैंसूर के निकट द्वारा समुद्र था । वह रामानुज से प्रभावित था ।

यादव वंश

- यह देवगिरी में स्थापित हुआ इस राज्य की स्थापना भिल्लन ने की ।

पाण्ड्य

- संगम काल से ही किसी न किसी रूप में पाण्ड्य राज्य का अस्तित्व बना रहा । 13 वीं शताब्दी में तमिल देशों को चोलों को परास्त कर अपनी शकित का विस्तारकिया | मार्कोपोलो 1288 से 1293 ई. तक पाण्ड्य राज्य में रहा ।

काकतीय

- 12 वीं शताब्दी में सक्रिय हो गया । चालुकयों से स्वीधनता को घोषणा प्रोलराज द्वितीय ने किया ।

बहमनी राज्य

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में1347 ई. में जफर खाँ ने अलाउद्दीन हसन बहमान शाह की उपाधि धारण की एवं स्वतंत्र बहमनी राज्य की स्थापना की इसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया ।

मुहम्मद प्रथम

- बहमान शाह की मृत्यु के बाद शासक बना । इसका शासन काल 1358-1375 ई. रहा । इसका अधिकांश समय विजय नगर के साथ संघर्षमें बीता | मुदगल के किले पर बुक्का प्रथम के साथ संघर्ष हुआ । यही पर बारूद का पहली बार प्रयोग प्रारम्भ हुआ प्रशासन की सुविधा के लिए बहमनी साम्राज्य को निम्न प्रातो में बांटा : दौलताबाद ,बरार, बीदर और गुलबर्गा ।
- 1397 ई. में बहमनी साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण शासक फिरोज गद्दी पर बैठा । इसने भीमा नदी के किनारे फिरोजबाद नगर की नींव डाली । इसने दौलताबाद में वेधशाला बनाया ।
- इसके बाद अहमद प्रथम गद्दी पर बैठा ।इसने सर्वप्रथम गुलबर्गा के स्थान पर बीदर को अपनी राजधानी बनाया । बीदर का नया नाम मुहम्मदाबाद किया गया ।
- बहमनी साम्राज्य के पतन के बाद निम्न राज्य बन बैठे ।
- 1527 ई. में अमीर उल बरीद ने अतिम बहमनीशासक कलिमुल्ला को खदेड कर बरीद शाही वंश की स्थापना की ।
- बरार में इमारशाही वंश की स्थापना हुई ।
- (3)1489-90में युसुफ आदिल शाह ने बीजपुर में आदिल शाही वंश की स्थापना की । इसी वंश के इब्राहिम आदिल शाह ने बीदर को अपने राज्य में मिला लिया ।
- (4) 1490में मलिक अहमद ने अहमद नगर में निजाम शाही की स्थापना किया । 1517में बराबर को इस राज्य में मिला लिया गया ।
- (5) गोलकुण्डा में कुतुबशाह द्वारा कुतुबशाही वंश की स्थापना की गई ।

विजय नगर साम्राज्य

- संगम के 5 पुत्रो में से हरिहर तथा बुक्का ने तुंगभद्रा नदी के उतरी तट पर विजय नगर शहर एवं राज्यो की नींव मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में1336 ई. में डाली । इन्होंने अपने पिता के नाम पर संगम वंश की स्थापना किया ।
- दोनों भाईयो ने बारी बारी से शासन किया । पहले हरिहर प्रथम उसके बाद बुक्का प्रथम गद्दी पर बैठा ।बुक्का के पुत्र कुमार कम्पन ने मदुरा विजय की । इस उपलक्ष्य में उसकी पत्नी गंगादेवीं ने मदुरा विजय नामक ग्रन्थ लिखा ।

- इस वंश का एक महत्वपूर्ण शासक देवराय प्रथम हुआ | इसी के शासन काल में1420 ई. में इटली के निकोलोकाण्टी नामक यात्री विजयनगर आया ।देवराय प्रथम नगर का प्रथमशासक था जिसने 10,000 मसुलमानों को सेना में नियुकत किया ।
- इसकी मृत्यु के बाद देवराय द्वितीय गद्दी पर बैठा । फारस का राजदूत अब्र्दुज्जाक इसके समय में विजयनगर आया । देवराय द्वितीय ने स्वयं सता सभाल ली । इसे प्रथम बलापहार कहा जाता है ।
- संगम वंश का अतिम शासक विरूपाक्ष द्वितीय था । इसके समय सालुव नरसिंह नामक एक सेनानायक ने सगंम वंश का अंत कर स्वयं सता सभाल ली। इसे प्रथम बलापहार कहा जाता है

सालुव वंश

- इस वंश के शासकोंमें सालुव नरसिंह एवं इम्माडि नरसिंह प्रमुख है एक सेनानी नरसा नायक के पुत्र वींर नरसिंह ने 1505 ई. में इम्माडि नरसिंह की हत्या कर तुलुब वंश की स्थापना की । इस परिवर्तन को द्वितीय बलापंहार कहा जाता है।

तुलुब वंश

- वींर नरसिंह का शासन काल अशांतिपूर्ण रहा । इसकी मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई कृष्ण देव राय 1509 ई. में गद्दी पर बैठा ।
- विजयनगर एवं बहमनी के बीच युद्ध का करण रायचुर दोआव के क्षेत्र कर कब्जा करना था | कृष्ण देव ने अनेको विजयो द्वारा साम्राज्य का विस्तार किया । इसने 1510 ई. में भटकल में पुर्तगलियो को किला बनाने की अनुमति दी ।
- पुर्तगाली यात्री डोमिगो पायस विजयनगर की यात्रा पर आया । इसने कृष्णदेवरायकी प्रंशंसा की ।
- कृष्णदेव सय के दरबार में तेलगु के आठ महान विद्वान रहते थे
- कृष्णदेव राय ने अमुकत माल्यदा नामक ग्रान्थ की रचना की ।
- निर्माण के क्षेत्र में कृष्णदेव राय ने नागलपुर नामक नये नगर की स्थापना की । इसने हजारा एवं विट्ठल स्वामी नामक मंदिर का निर्माण करवांया ।

संदाशिव राय

- इस वंश का अतिंम शासक सदाशिव राय हुआ जो 1570 ई. तक शासन किया लेकिन वांस्तविक शकित एक मंत्री राम राजा के हाथी में रही ।
- इसी के समय 1565 ई. में राक्षसी तंगड़ी का युद्ध हुआ जिसमें चार मुस्लिम प्रांत बीजपुर , अहमदनगर ,गोलकुण्ड ,वींदर था | इसमें विजयनगर बुरी तरह पराजित हुआ । रामराय इस युद्धमें मारा गया
- तिरूमल के सहयोग से सदाशिव ने पेनुकोड़ा को राजधानी बनाकर शासन करना शुरू किया ।

अरदिदु वंश

- 1570 ई. में तिरूमल ने सदाशिव को पदच्युत कर चौथे राजवंश अरिवंद वंश की स्थापना किया ।

- इस वंश का अंतिम शासक श्रीरगं तृतीय था । जो विजयनगर साम्राज्य का भी अंतिम शासक था ।

मगुल काल

मगुलकालिन साहित्य

फारसी साहित्य

- बाबरनामा या तुजुक-ए-बाबरी : यह बाबर द्वारा तुर्की भाषा में लिखी गई उसकी आत्मकथा है इससे तत्कालीन भारत के राजनीतिक,सामजिक,अआर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश पडता है बाबर ने 5 मुस्लिम और दो हिन्दू राज्य की बातकी है | अकबर के समय रहीम खान खाना ने इसका अनुवांद फारसी में किया ।

हुमायूँनामा

- बाबर की बेटी एवं हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने इसकी रचना की ।

तबकात-ए-अकबरी

- निजामुद्दीन अहमद ने रचना की । इससे अकबर के समय की जानकारी मिलती है

अकबरनामा

- अबुल फजल द्वारा रचित है इससे अकबर के विषय में जानकारी मिलती है

तजुक-ए-जहाँगीरी

- जहाँगीरि द्वारा स्वयं लिखी उसकी आत्मकथा है
- पादशाहनामा
- अब्दुल हमीद लाहौरी द्वारा रचित है इसमें शाहजहाँ के शासनकाल के 20 वर्षों का उल्लेख है
- कुछ ग्रन्थ का फारसी में अनुवांद
- महाभारत - 1589 ई.मेंबदायूँनी ने रज्मनामा के नाम से
- अर्थर्ववेद - हाजी इब्राहिम सरहिन्दी
- राजतरंगिणी - कल्हण
- लिलावती -फैजी

हिन्दी साहित्य

- अकबर ने बीरबल को कविप्रिय की उपाधि प्रदान की । कश्मीर के कवि मुहम्मद हुसैन को जर्रीकलम की उपाधि दी ।

बाबर

- बाबर पितृपक्ष की ओर से तैमूर के 5वें पीढी के सदस्य थे जबकि मातृपक्ष की ओर से चंगेल खाँ के 14 वें का अंग था 1494 ई.में बाबर फरगना का शासक बना । बाबर ने अपने पूर्वजो की उपाधि मिर्जा को त्याग कर बादशाह की नई उपाधि धारण की ।
- बाबर का भारत की ओर पहला अभियान युसुफजाईजाति के विरूध्द था | इस प्रथम अभियान में सर्वप्रथम बाबर ने तोपखाने का प्रयोग किया ।
- भारत पर 5वें अभियान में बाबर और इब्रहिम लोदी के बीच 20 अप्रैल 1526 ई. पानीपत की प्रथम लड़ाई हुआ बाबर ने इस युद्धमें पहली बार तुलुगमा युद्धनीति का प्रयोग किया । इसके फलस्वरूप बाबर विजयी रहा और मगुल वंश की स्थापना की
- बाबर ने इस विजय के उपलक्ष में प्रत्येक काबुल निवांसी को एक चाँदी का सिक्का उपहार दे दिया | इसी उदारता के कारण उसे कलन्दर की उपाधि दी गई ।

- 1527 ई. में खानवां के युद्धमें बाबर एवं राणा सांगा के बीच मुकाबला हुआ । बाबर ने अपने सैनिको के उत्साहवर्ध्दन के लिए शराब पीने और बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया । मुसलमानो से तमगाकर न लेने का ऐलानकिया । फलस्वरूप बाबर विजयो रहा ।
- 1528 ई. में बाबर ने चंदेरी के युद्धमेंमेंदनी को पराजित किया ।
- 1529 ई. में बाबर ने घाघरा के युद्धमेंबंगाल एवं बिहार की संयुकत सेना को पराजित किया
- काबुल के विद्रोह के दमन के लिए जाते हुए लौहार में 1530 ई. में बाबर की मूत्यु हो गयी ।काबुल में उसे दफता दिया गया ।

हुमायुँ

- बाबर की मृत्यु के बाद 30 दिसम्बर 1530 ई. को 23 वर्ष को उम्र में गद्दी पर बैठा ।
- हुमायूँ ने दिल्ली के पास दीन पनाह नामक नगर बनवाया ।
- चितौड की रानी कर्णावती ने हुमायूँ पास रखी भेजी थी ।
- हुमायूँ ने बंगाल अभियान के दौरान गौड का नया नाम जन्नताबाद रखा |
- 26 जून 1539 ई. को चौसा के मैदान में मुग़ल सेना पर रात में शेरशाह ने हमला कर मुग़ल सेना को पराजित किया | हुमायूँआगरा आ गया |
- 17 मई 1540 को कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध हुआ | इस हुमायूँ पराजित हुआ | शेर खां ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया |
- आगरा दिल्ली खोने के बाद हुमायूँ सिंध पहुंचा वहा उसने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरु फारसीवासी मीर बाबा की पुत्री हमीदा बानू बेगम से 1541 ई. में विवांह किया |इसके बाद अम्र कोट के राणा बीरसाल के पास पहुंचा | 1542 ई. में यही अकबर का जन्म हुआ | 1543 ई. में फारस के शाह तहमास्प के यहा चला गया | फ़रवरी 1555 ई. मेंहुमायूँ लाहौर पर अधिकार कर लिया | मई 1555 ई. में हुए मच्छीवांडा के युद्ध के फलस्वरूप सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया | जून 1555 ई. में सरहिन्द के युद्ध में अफगान सुल्तान सिकन्दर सुर को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया |
- 23 जुलाई 1555 को हुमायूँ फिर दिल्ली की गद्दी पर बैठा | जनवरी 1556 ई. में दीनपनाहभवन स्थित पुस्तकलय की सीढियों से गिरने के पश्चात हुमायूँ की मृत्यु हो गयी |

सूर वंश

- शेर शाह के पिता हसन खाँ पंजाब में आकर बसे | शेर शाह का जन्म 1472 ई. में यही हुआ | उसके बचपन का नाम फरींद था | एक दिन शेर के शिकार करने मेंवीरता से प्रभावित होकर खाँ लोहानी ने शेर खां की उपाधि दी | कन्नौज विजय के बाद शेर शाह की उपाधि धारण की |
- शेर शाह ने उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए एक शक्तिशाली रोहतासगढ़ किले का निर्माण करवांया |
- कालिंजर के किले के घेरे के दोरान तोप के गोले के फटने से शेर शाह की मृत्यु 1545 ई. में हो गयी |

- शेर शाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र इस्लाम शाह 1545 से 1553 तक शासन किया | यह अपनी राजधानी आगरा से ग्वालियर ले गया |
- इस्लाम शाह की उसके चाचा मुबारिज खां ने हत्या कर दी एवं आदिलशाह सुर के नाम से वह शासक बना |
- शेरशाह ने शुद्ध चांदी का रुपया तथा तांबे के दाम ढ़लवाए जो 180 ग्राम का था | शेरशाह दिल्ली में पुराना किला का निर्माण करवांया |

अकबर

- 1551 ई. में 9 वर्ष कि उम्र में अकबर गजनी को सुबेदारी सौपी गयी | 1555 में अकबर लाहौर का गवर्नर बना |
- हुमायूँ की मृत्यु के बाद बैरम खां ने गुरदासपुर के निकट कलानोर में फरवरी 1556 ई. में अकबर का राज्याभिषेक करवांया |
- पानीपत के द्वितीय युद्ध में अफगान सेनापति हेमू को पराजित कर दिल्ली पर मुगलों के अधिकार को स्थायी बनाया | हेमू आदिलशाह सूर का सेनापति था उसने 24 युधो में 22 युद्ध जीते थे |
- अकबर 1556-1560 तक बैरम खां का सरंक्षक रहा | अकबर ने बैरम खाँ को मक्का की यात्रा पर जाने को कहा पाटन में मुबारक खाँ नामक अफगान युवक ने बैरम खाँ की हत्या कर दी | अकबर ने बैरम खाँ की विधवां से विवांह कर उसके पुत्र को खान- खाना की उपाधि दी |
- 1560 में बैरम खाँ से मुक्त होकर हरम दल के प्रभाव में चला गया | इस दल की प्रमुख धाय माँ माहम अनगा थी | यह काल 1562 ई. तक रहा | इसे पेटिकोट सरकार कहते है |
- अकबर ने राजनीतिक विजय की शुरुआत 1561 ई. में मालवां विजय से शुरू की जहाँ बाज बहादुर शासक था | 1562 ई. में ही आमेंर के राजा भारमल ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर लिया और अपनी पुत्री की शादी अकबर से कर दी जिससे जहांगीर पैदा हुआ | इसी वंश के भगवान दास एवं मान सिंह को उच्च मनसब प्राप्त हुआ |
- 1568 ई. में चितौड़ अभियान किया | उदय सिंह शासक था | युद्ध में जयमल एवं फता मारे गए | आगरा में जयमल एवं फता कीमूर्ति अकबर ने लगवायी |उदयसिंह की मृत्यु की बाद महाराणा प्रताप शासक बना | 1576 ई. में हल्दीघाटी के युद्ध में राणा पराजित हुआ | 1597 ई. में राणा की मृत्यु के बाद अम्र सिंह शासक बना |
- दक्षिण के राज्य की अधीनता स्वीकार करने के लिए दूत भेजा खानदेश ने अधीनता स्वीकार किया किन्तु और राज्य ने स्वीकार नही किया | चाँद बीबी अहमदनगर से सम्बंधित थी |
- 1600 ई. में अहमदनगर पर कब्जा कर लिया गया |
- 1602 ई. में सलीम के कहने पर वीर सिंह बुंदेला ने अबुल फजल की हत्या कर दी |

जहांगीर

- 1605 ई. में फतेहपुर सीकरी में अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर शासक बना | सलीम का जन्म फतेहपुर सीकरी में स्थित सलीम चिश्ती की कुटिया में भारमल की बेटी मरियम

उज्जमानी के गर्भ से 30 अगस्त 1569 ई. को हुआ | अकबर जहाँगीर को शेखोंबाबा के नाम से पुकारता था | सलीम की शादी 1585 ई. में आमेंर के राजा भगवांन् दास की पुत्री मानबाई से हुआ |

- शासक बनने के बाद आगरा में जहाँगीर ने सोने की न्याय की जंजीर लगवायी | लोक कल्याण के कार्यो से सम्बंधित 12 आदेशों की घोषणा की |
- जहाँगीर ने सिक्खों के पंचम गुरु अर्जुनदेव को खुसरो की सहायता करने से आरोप में मृत्युदंड दिया गया |
- 1611 ई. में जहांगीर ने नूरजहाँ से शादी की | इसका वांस्तविक नाम मेंहरुन्निसा था | इसकी पहली शादी अली कुली वेग, जिसे शेर अफगान भी कहते हैं,से हुई थी |
- जहाँगीर के शासन काल मेंमेंवाड़ ने अंतिम रूप से मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली | राणा अमर सिंह ने अपने पुत्र कर्ण सिंह को मुग़ल मनसवदारी में शामिल होने के लिए भेजा |
- 7 नवम्बर 1627 में भिमावर नामक स्थान पर जहाँगीर की मृत्यु हो गयी | उसे लाहोर के शहादरा में रावीं नदी के किनारे दफनाया |
- नूरजहाँ की माँ अस्मत वेग ने गुलाब से इत्र निकालने की विधि को खोजा |

शाहजहाँ

- शाहजहाँ कावांस्तविक नाम खुर्रम था | उसके अनेकों विवाह में सबसे प्रमुख आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन बानू बेगम (जिसे मुमताज-ए-महल कहा जाता है) से किया |
- जहाँगीर की मृत्यु के बाद 6 फरवरी 1628 को आगरा में शाहजहाँ का राज्याभिषेक हुआ | नूरजहाँ को 2 लाख रुपया वांर्षिक पेंशन दी कर लाहौर भेज दिया गया | जहाँ 1645 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी |
- शाहजहाँ की महत्वपूर्ण विजय अहमदनगर रही | 1633 ई. में इसे मगुल साम्राज्य में मिला लिया गया |
- 1657 ई. में शाहजहाँ बीमार पड़ा | उतराधिकार का युद्ध शुरू हो गया | इस समय औरंगजेब दक्षिण का, मुराद गुजरात का, शुजा बंगाल का गवर्नर था |
- धरमट के युद्ध में दारा (जसवत सिंह) पराजित हुआ | विजय की स्मृति में औरंगजेब ने फतेहाबाद नगर बसाया |
- 1659 ई. सामुगड़ के युद्ध में दारा अंतिम रूप पराजित हुआ |
- शाहजहाँ आगरा के किले में अपनी बेटी जहाँआरा के साथ 1666 ई. में मृत्यु हो गयी | मुमताज महल के पास में इसे दफनाया गया |

औरंगजेब

- जुलाई 1658 को औरगंजेब बादशाह बना | इसे जिन्दा पीर,शाही दरवेश इत्यादि नामों से पुकारा जाता है |
- औरगंजेब की सामाज्यवांदी नीति की महत्वपूर्ण सफलता दक्कन रहा | 1686 ई. में उसने बीजापुर तथा 1687 ई. में गोलकुण्डा को मगुल साम्राज्य में मिला लिया |
- मराठा पर नियंत्रण के लिए शाइस्त खाँ को 1600 में दक्कन का सूबेदार बनाया | 1663 ई. में शिवजी ने आक्रमण कर शाइस्ता खाँ को घायल के दिया | 1655 ई. में जय सिंह ने शिवजी के साथ पुरन्दर की संधि की |

सिक्ख

- सिक्ख धर्म की स्थापना गुरु नानक द्वारा की गई इसके दूसरे गुरु अंगद थे | चौथे गुरु रामदास के समय गुरु का पद वंशानुगत को गया | इन्हें अकबर ने अमृतसर मेंजमीन प्रदान की जिसे पर स्वर्ग मंदिर का निर्माण हुआ
- 5वें गुरु अर्जुन देव ने ग्रन्थ साहिब का संकलन किया | 1606 ई.में जहाँगीर ने मृत्युदण्ड दिया | इन्होंने अनिवार्य आध्यात्मिक कर लगाए |
- 6वे गुरू हरगोबिन्द ने सिक्खों का सैनिकीकरण किया |
- अंतिम गुरु गुरू गौबिन्द सिंह थे | जिसने खालसा पंथ की स्थापना की |

मराठा

- शिवजी का जन्म पूना के निकट शिवनेर के किले में जीजाबाई के गर्भ से हुआ | इसके पिता का नाम शाहजी था | शिवजी के ऊपर उसके माता , संरक्षक दादीजी कोण्डदेव एवं गुरू रामदास का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा |
- शाहजी ने शिवजी को पूना की जगीर प्रदान की और स्वंयबीजापुर की नौकरी के ली |
- 1656 ई. में शिवजी ने रायगढ को अपनी राजधानी बनाया | 16 जून 1674 को शिवजी ने रायगढ मेंप्रसिद्ध विद्वान गंगाभट्ट द्वाराअंपना राज्यभिषेक करवाया और छत्रपति, हिन्दु धर्मोद्धारक की उपाधि की |
- 1680 ई. में शिवजी की मृत्यु को गया |
- शिवजी हो प्रशासन के कार्य में सहायता के लिए अष्टप्रदान परिषद थी | इसमें पेशवां की भूमिका सर्वाधिक प्रमुख थी |
- शिवजी के बाद शम्भजी शासक बना | 1689 ई. मेंशम्भजी एवं उसके सलाहकार कविकलश को संगमेंश्वर के किले से पकड़कर उनकी हत्या कर दी गई |
- शम्भ जी के बाद छत्रपति राजाराम शासक बना | राजाराम 1700 ई. में मुगलो के साथ संघर्षमें मारा गया | इसकी विधवां तारावांई थी |

मुगल प्रशासन

- अकबर ने स्वंय को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित किया | उसने खलीफा के समान स्वंय ही खुतबा पढ़ा और जमीबोस और सिजदा की प्रथा आरम्भ किया | 1579 ई. में मजहर की घोषणा के बाद धार्मिक मामलों का प्रदान बन गया |
- अकबर के शासन में 1580 ई. में 12 सूबा था शासन के अंतमें 15 हो गए | औरगंजेब के समय 20 तथा शाहजहाँ के समय सूबो की संख्या 18 थी |
- अकबर के समय राजस्व निधार्रण के पूर्व भूमि की माप कराई जाती थी | 1587 ई में अकबर ने सन के रस्सी से निर्मित सिकन्दरी गज के स्थान पर इलाही गज काप्रयोग प्रारम्भा किया | अकबर ने 1580 ई. में दहसाला नामक नवींन प्रणाली को प्रारम्भा किया | इसकी देखरेख राजा टोडरमल करते थे |
- अकबर ने सूर्य पर आधारित इलाही संवत को चलाया | इसे फसलों संवत भी कहा जाता है
- मनसबदारी प्रथा की शुरुआत अकबर ने किया | मनसब शब्द का प्रथम उल्लेख अकबर के शासन के 11 वे वर्ष में मिलता है किन्तु मनसब प्रदान करने का उल्लेख 1577 ई. में मिलता

है पहले जात शब्द का उल्लेख होता था किन्तु 1594-95 से सवांर कर पद भी जुड़ने लगा |

- अकबर ने दाग प्रथा का प्रचलन किया | अकबर के समय मनसबदारों की संख्या 1803 थी जो औरगंजेब के समय 14449 हो गयी |
- जहाँगीर ने सवांर पद में दुआस्पा-सिंहआस्पा की व्यवस्था की |
- 1604-05 में सबसे पहले पुर्तगालियों द्वारा तम्बाकू लाया गया |
- मुगल काल मेंनहर का निर्माण का श्रेय शाहजहाँ को है उसने फैज एवं शाह नहर का निर्माण करवाया |
- मुगल काल में बाबर ने चाँदी का शाहरुख एवं बाबरी नाम का सिक्का चलाया | अकबर ने सोने के अशर्फी सिक्का चलाया | अकबर के ताबे के सिक्के दाम कहलाए |
- 1 रूपया - 40 दाम
- जहाँगीर ने निसार नाम का सिक्का चलाया |
- **राजपूत नीति**
- अकबर ने राजपूतों के साथ सुलह-ए-कुल की नीति अपनाया | अकबर ने बीकानेर के शासक राय कल्याणमल और जैसलमेंर के राजा हरराय के साथ भी वैवांहिक संबंध स्थापित किया | 1584 ई. अकबर ने भगवांनदास की पुत्री से जहाँगीर का विवांह किया जिससे खुसरो का जन्म हुआ |

मुगालो की धार्मिक नीति

- अकबर ने 1562 ई . में युद्ध बंदियो को दास बनाने की प्रथा को बंद कर दिया | 1563 ई. में अकबर ने हिन्दू तीर्थ स्थल की यात्रा की और तीर्थ कर समाप्तकर दिया | 1564 ई. मेंबल पूर्वक धर्म परिवर्तन पर रोक लगा दी |
- 1575 ई. मेंअकबर ने फतेहपुर सीकरी मेंइबादतखाना की स्थापना की| जिसका उद्देश्य धार्मिक वांद विवांद द्वारा सभी धर्मों के सार को जानना था | जैन विद्वान हरिविजय सूरी एवं जिन सेन सूरी भी भाग लिया |
- जून 1579 ई. मेंदीन-ए-इलाही नामक धर्म का प्रवर्तन किया | दीन-ए-इलाहीमें शिक्षा के लिए इतवार का दिन नियत था इस धर्म को स्वीकार करने वाला एक मात्र हिन्दू बीरबल था |
- अकबर के दरबार में नवरत्न रहते थे जिसमे अधिकांश हिन्दु थे नवरत्न में बीरबल ,टोडरमल आदि |टोडरमल को जब्ती प्रणाली का जनक माना जाता है | भगवांन दास, तन सेन, फैजी भी थे | फैजी अबुल फजलका बडा भाई था |
- शाहजहाँ के काल में तीर्थ यात्रा कर को पुनःलगाने की आज्ञा दी गई
- औरगंजेब ने इस्लाम धर्म के नियमों के पालन कराने के उद्देश्य से दीवांन-ए-मुलाजिम नामक विभाग बनाया | जिसका प्रमुख अधिकारी मोहतसिब था |
- औरगंजेब ने झरोखा दर्शन,दरबार में नृत्य सगीत, टीका प्रथा नवरोज त्योहार पर प्रतिबंध लगा दिया | 1669 ई. में मुहर्रम का त्योहार मनाने पर प्रतिबंध लगा दिया |
- 1679 ई. में जजिया कर पुनःलगा दिया |
- मगुल काल में धर्म की भाषा अरबी थी | फारसी दरबार की सरकारी भाषा थी |

शिक्षा

- बाबर ने शिक्षा के विकास के लिए शुहरत-ए-आम नामक विभाग की स्थापना की ,जिसका कार्य स्कूलों एवं कालेजों कानिर्माण करना था | हुमायूँ ने पुराने किले के शेरमडल नाम के हाल में अपना पुस्तकालय बनाया | अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की |

मुगलकालीन स्थापत्य

- बाबर ने आगरा में रामबाग एवं जोहरा बाग नामक दो बगीचे बनवाए |
- हुमायूँ ने 1533 ई. में दिल्ली में दीनपनाह बनाया जिसे आज पुराना किला कहा जाता है | इसकी मृत्यु के बाद 1564 ई. मेंइसकी पत्नी हमीदा बानू बेगम ने इसका मकबरा बनवांया |
- शेरशाह ने दीनपनाह को तुड़वाकर उसके स्थान पर पुराने किलेका निर्माण करवाया | इसी किले मेंकिला-ए-कहुना मस्जिद का निर्माण करवाया |
- अकबर ने 1566 में आगरा के किले का निर्माण करवांया | इस किले में अकबर ने जहाँगीर महल का निर्माण करवाया जो पूर्णतःहिन्दू शैली से बना है |इसके अलावां इलाहाबाद एवं लाहौर के किले का निर्माण करवांया अकबर ने फतेहपुर में अपनी राजधानी का निर्माण कार्य भी किया ।1571 ई. में इसे राजधानी बनाया ।
- जहाँगीर के काल में सिकन्दरा स्थित अकबर का मकबरा एवं नूरजहाँ के पिता एतामादुद्दौला का मकबरा मुख्य है एतमादुद्दौला के मकबरे को हुमायूँ के मकबरे एवँ ताजमहल के बीच की कड़ी माना जाता है
- शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला का निर्माण करवाया 1638 ई. में शाहजहाँ ने दिल्ली में नई राजधानी बनाने के उद्देश्य से शाहजहाँ की नींव रखी । दिल्ली स्थित जामा मस्जिद का निर्माण इसी ने किया ।
- ताजमहल का निर्माण भी इसी समय हुआ |
- औरगजेब ने दिल्ली के लाल किले में माती मस्जिद का निर्माण करवाया ।

चित्रकला

- अकबर के समय भिति चित्रकारी की शुरूआत हुई । इसके समय के महत्वपूर्ण चित्रकार दसवंत,बसावन,केशव थे ।
- मुगल काल में जहाँगीर के समय चित्रकारी अपने चरम पर थी । इस समय बिसनदास,गोवर्ध्दनप्रमुख चित्रकारी थे । मंसूर एवं अबुल हसन प्रमुख थे

HARYANA JOB ALERT

Empowering Youth
Empowering Nation
HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!